B.A (Hons) Part-I
Philosophy - Paper I
Topic - जैन दर्शन का जीव विचार
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

(1)

जिस सत्ता को अन्य भारतीय दर्शनों में आत्मा कहा जाता है, उसे जैन दर्शन में जीव कहा जाता है। जैन दर्शन में चेतन द्रव्य को जीव कहते हैं क्योंकि चैतन्य के अभाव में जीव की कल्पना कदापि संभव नहीं है। जैन दर्शन में जीव की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि "चेतना लक्षणो जीवः"। चैतन्य जीव में सर्वदा अनुभूति रहने के कारण जीव को जैन दर्शन में प्रकाशमान माना गया है क्योंकि वह अपने आप को प्रकाशित करने के साथ ही साथ अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। जैन दर्शन के अनुसार जीव नित्य है जबकि शरीर नाशवान है। फिर यह भी कहा गया है कि जीव आकार विहीन है जबकि शरीर आकारयुक्त है। जैन दर्शन के अनुसार जीव को ज्ञाता माना गया है क्योंकि वह विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। फिर जैन दर्शन में यह भी बतलाया गया है कि जीव कर्ता है क्योंकि वह सांसारिक कर्मों में भाग लेता है। जीव कर्म करने में पूर्णतः स्वतंत्र है क्योंकि वह शुभ और अशुभ कर्म से स्वयं अपने भाग्य का निर्माण कर सकता है। जैन दर्शन में यह भी बतलाया गया है कि जीव भोक्ता भी है क्योंकि जीव अपने कर्मों का फल स्वयं भोगने के कारण सुख और दुःख की अनुभूतियाँ प्राप्त करता है। जैन दर्शन के अनुसार जीव में चार प्रकार की पूर्णताएँ पाई जाती हैं। अनंत ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत सुख। फिर जैन दर्शन में यह भी कहा गया है कि जीव प्रकाश की तरह जिस शरीर में निवास

करता है, उसी शरीर के अनुसार आकार ग्रहण
कर लेता है। जैन दर्शन के अनुसार जीव अनेक
है। जैन दर्शन मे यह बतलाया गया है कि जीव
दो प्रकार के होते है। बद्धजीव और मुक्त जीव।
जैन दर्शन मे यह बतलाया गया है कि मुक्त
जीव उसे कहा जाता है जिस जीव ने मोक्ष
प्राप्त कर लिया है। इसके ठीक विपरित बद्ध
जीव उसे कहते है ~~जिस जीव~~ जो
जीव बंधनग्रस्त है। जैन दर्शन के अनुसार
बद्ध जीव भी दो प्रकार के होते है।
स्थावर जीव और त्रस जीव। जैन दर्शन
के अनुसार स्थावर जीव गतिहीन जीवों
को कहा जाता है। ये जीव पृथ्वी, वायु,
जल, अग्नि और वनस्पति मे निवास
करते है। चूँकि इनके पास केवल एक
ज्ञानेन्द्रिय है इसलिए इन्हे एकेन्द्रिय
जीव भी कहा जाता है। इन्हे केवल
स्पर्श का ही ज्ञान होता है। जैन
दर्शन के अनुसार त्रस जीव वे है जो
गतिशील है। ये निरन्तर विश्व मे
भटकते रहते है। जैन दर्शन का कहना
है कि त्रस जीव विभिन्न प्रकार के
होते है। कुछ त्रस जीव की दो इन्द्रियाँ
होती है- जैसे घोंघा, कृमि इत्यादि। इनकी
दो इन्द्रियाँ है - स्पर्श और स्वाद।
फिर कुछ त्रस जीव की तीन इन्द्रियाँ
होती है - स्पर्श, स्वाद और गन्ध।
ऐसे जीवों का उदाहरण चीटी है।

फिर कुछ त्रस जीवों की चार इन्द्रियाँ - स्पर्श, स्वाद, गन्ध और दृष्टि होती है। ऐसे जीवों में मच्छड़, मक्खी, भौंरा इत्यादि आते हैं। फिर कुछ त्रस जीवों की पाँच इन्द्रिया - स्पर्श, स्वाद, गन्ध, दृष्टि और शब्द होती है। इसप्रकार के जीवों में मनुष्य, पशु-पक्षी इत्यादि आते है। जैन दर्शन में जीव के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिये गये है।

(1) जैन दर्शन का कहना है कि किसी भी वस्तु का ज्ञान उसके गुण को देखकर होता है। जैन दर्शन के अनुसार इसीप्रकार जीव के गुणों को देखकर जीव के अस्तित्व का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है।

(2) जैन दर्शन का कहना है कि जिसतरह किसी मशीन को चलाने के लिए एक चेतन चालक की आवश्यकता होती है ठीक उसीप्रकार शरीर का चालक जीव है।

(3) जैन दर्शन मे कहा गया है कि चूँकि हमारी इन्द्रियाँ ज्ञान का साधन है इसलिए वे अपने आप को ज्ञान नही दे सकती है जिससे यह प्रमाणित होता है कि कोई न कोई ऐसी सत्ता अवश्य है जो विभिन्न इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करती है। जैन दर्शन के अनुसार वही सत्ता जीव है।

इसप्रकार हमलोग यह देखते है कि जैन दर्शन जीव की सत्ता को प्रमाणित करता है और यह बतलाता है कि जीव का चरम लक्ष्य मोक्ष ~~[illegible]~~ की प्राप्ति करना है।